नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

भारत के लिए नई चुनौती

पाकिस्तान की संसद द्वारा पारित 27 वें संवैधानिक संशोधन ने उसके सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर को जिस तरह की असीमित शक्तियां प्रदान की हैं, वह केवल पड़ोसी देश की राजनीतिक व्यवस्था में बदलाव नहीं है. यह पूरे दक्षिण एशिया, विशेष रूप से भारत की सुरक्षा संरचना को सीधे प्रभावित करने वाला निर्णय है. 'फील्ड मार्शल' का आजीवन पद, 'चीफ ऑफ डिफेंस फोर्सेज' के रूप में तीनों सेनाओं का केंद्रीकृत नियंत्रण, और कानूनी सुरक्षा, यह सब पाकिस्तान के इतिहास में सैन्य वर्चस्व को पहली बार संवैधानिक वैधता प्रदान करते हैं. यह स्थिति भारत के लिए गहरी चिंता और नई रणनीतिक सतर्कता की मांग करती है.

सबसे खतरनाक पहलू यह है कि पाकिस्तान के परमाणु शस्त्रागार का संचालन करने वाली स्ट्रेटेजिक प्लान्स डिवीजन अब सीधे तौर पर जनरल मुनीर के प्रभाव में है. सैद्धांतिक रूप से यह नियंत्रण पहले नागरिक सरकार के अधीन माना जाता था, पर अब 'एक व्यक्ति–एक आदेश' की अवधारणा पाकिस्तान की परमाणु नीति को और अनिश्चित बना देती है. किसी भी संकट की स्थिति में निर्णय लेने का समय कम होगा और पूरे क्षेत्र की स्थिरता जनरल मुनीर की व्यक्तिगत मानसिकता पर निर्भर होगी. भारत जैसे परमाणु क्षमता संपन्न देश के लिए यह बदलाव गंभीर चिंता का विषय है, क्योंकि यह सामरिक संतुलन को व्यक्तिगत विवेक पर निर्भर बना देता है. इस संशोधन के बाद पाकिस्तान में नागरिक–सैन्य शक्ति संतुलन का कोई अस्तित्व नहीं बचा है. सेना अब न केवल पर्दे के पीछे, बल्कि संविधान की शक्ति से वैधानिक रूप से उच्चतम राजनीतिक संस्था बन गई है. जनरल मुनीर को मिला आजीवन कार्यकाल और कानूनी संरक्षण इस बात की पुष्टि करते हैं कि पाकिस्तान में लोकतांत्रिक संस्थाएं लगभग ध्वस्त हो चुकी हैं. बाहरी दुनिया के लिए अब पाकिस्तान से संवाद का अर्थ होगा,सीधे सैन्य प्रतिष्ठान से बातचीत. यह स्थिति भारत के लिए विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि सैन्य नेतृत्व अक्सर कठोर, तात्कालिक और जोखिमपूर्ण निर्णयों को प्राथमिकता देता है, जो सीमाई तनाव को किसी भी समय भड़का सकता है.

पाकिस्तान का राजनीतिक इतिहास बताता है कि जब भी वहां आंतरिक अस्थिरता बढ़ती है, सैन्य नेतृत्व भारत के खिलाफ सीमा पार आतंकी गतिविधियों, संघर्ष विराम उल्लंघन या एलओसी पर तनाव बढ़ाने जैसे कदमों का सहारा लेता है. अब जबकि जनरल मुनीर को असीमित शक्तियां मिल चुकी हैं और नागरिक जवाबदेही समाप्त हो गई है, इस तरह की उकसावे की कार्रवाइयों में वृद्धि की आशंका और मजबूत हो जाती है .जाहिर है भारत के सामने अब एक स्पष्ट और कठोर चुनौती है,एक ऐसे पड़ोसी से निपटना, जहां सत्ता का केंद्र पूरी तरह सैन्य संरचना में निहित है. अब एलओसी पर तकनीकी व मानव खुफिया क्षमताओं को और मजबूत करना अत्यावश्यक है. किसी भी असामान्य सैन्य गतिविधि पर तत्काल, तेज और सटीक प्रतिक्रिया की व्यवस्था अनिवार्य हो गई है. दरअसल, चीन–पाकिस्तान की बढ़ती सामरिक साठगांठ को देखते हुए भारत को एक साथ दो मोर्चों पर संभावित खतरे से निपटने की क्षमता को उन्नत करना होगा. कुल मिलाकर भारत को अपनी पारंपरिक और परमाणु क्षमता का संतुलित लेकिन ठोस संदेश देना होगा कि किसी भी आक्रामक कदम की कीमत पाकिस्तान को अत्यंत महंगी चुकानी पड़ेगी.

बहरहाल, पाकिस्तान में लोकतांत्रिक परंपराओं का मुखौटा अब गिर चुका है और सत्ता पूरी तरह सैन्य प्रतिष्ठान की गिरफ्त में है. यह नया ढांचा क्षेत्रीय संतुलन के लिए चुनौतीपूर्ण है. शांति की उम्मीद रखना आवश्यक है, पर भारत के लिए अब पहले से कहीं अधिक जरूरी है कि वह हर परिस्थिति के लिए तैयार रहे—क्योंकि पड़ोसी के हाथ में अब असीमित शक्ति है और उसके निर्णयों पर कोई संवैधानिक रोक नहीं.

एनडीए की अभूतपूर्व जीत ने अनुमानों को झुठलाया

बढ़े हुए मतदान में भी महिलाओं की भागीदारी पुरुषों के मुकाबले 10 से 12 फीसदी तक ज्यादा थी. एक तो एनडीए को महिलाओं के अंधाधुंध समर्थन ने यह अभूतपूर्व विजय दिलायी और दूसरी बात यह थी कि जिस तरह तेजस्वी प्रसाद यादव ने अंधाधुंध और अव्यवहारिक चुनावी घोषणाएं की थीं, उस पर बिहार के मतदाताओं ने यकीन नहीं किया. वैसे इस अभूतपूर्व जीत के कुछ और कारण भी हैं, लेकिन फिलहाल यही दो कारण सबसे निर्णायक हैं.

पिछले तीन बार से बिहार विधानसभा चुनाव के एग्जिट पोल जो अनुमान बताते थे, हर बार हकीकत उनको गच्चा देती थी.

गच्चा इस बार भी नतीजों ने दिए हैं, लेकिन विरोध में नहीं बल्कि पक्ष में. 11 नंवबर 2025 को दूसरे दौर के चुनाव सम्पन्न होने के बाद 17 एजेंसियां ने अपनी एग्जिट पोल पेश किये थे, जिनमें से किसी भी एजेंसी ने यूं तो एनडीए यानी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को हारता हुआ नहीं बताया था, लेकिन किसी भी एग्जिट पोल में इतना सटीक अनुमान भी नहीं लगाया था. चुनाव में एनडीए ने अभूतपूर्व जीत हासिल की. इस चुनाव में भाजपा और जेडीयू दोनों ने 101–101 विधानसभा सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारे थे. एनडीए में जो अन्य पार्टियां शामिल हैं, उनकी भी सीटें पिछली बार के मुकाबले एक ज्यादा आई.

मोटे तौर पर राष्ट्रीय जनता दल की इस बार जबर्दस्त हार हुई है. अगर समूचे महागठबंधन को देखें, तो जिसमें राष्ट्रीय जनता दल के अलावा प्रमुख पार्टियों के रूप में कांग्रेस और सीपीआई (एमएल) शामिल थीं, उन्हें साझे तौर पर पिछले बार के मुकाबले 75 सीटें कम मिल रही हैं. क्योंकि पिछले बार इस गठबंधन को कुल 110 सीटें मिली थीं, जो कि बहुमत से सिर्फ 12 सीटें कम थीं.

प्रशांत किशोर बुरी तरह विफल: महागठबंधन पिछले बार के मुकाबले 75 सीटों से पीछे चल रहा था. इसमें जहां राष्ट्रीय जनता दल की 48 सीटें कम हुई हैं, वहीं कांग्रेस की 14, सीपीआई (एमएल) की 11 सीटें कम हुई हैं. उनके अन्य छोटी पार्टियों में भी दो सीटें कम हुई हैं. दूसरी तरफ प्रशांत किशोर की जनसुराज पार्टी जिसका इन चुनावों में बिना किसी इतिहास के भी भारी दखल महसूस किया जा रहा था, वह तो बिल्कुल टांय टांय फिस्स साबित हुई है. जनसुराज ने 200 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े किये थे और कुछ सीटों पर अपने सहयोगियों को समर्थन दिया था. लेकिन नतीजों के रूमें

जनसुराज को एक महाशून्य ही मिला है. एग्जिट पोलों के अनुमानों का यही हाल 2025 में भी वैसा ही रहा है. यह अलग बात है कि इस बार के अनुमान बिल्कुल उलटफेर वाले नहीं थे. ऊपर हमने 11 नवंबर 2025 को दूसरे दौर के चुनाव सम्पन्न होने के बाद जिन 17 एजेंसियों के एग्जिट पोल का जिक्र किया है, उनमें से कोई भी एनडीए को हारता हुआ नहीं बता रही थीं और कोई भी एजेंसी महागठबंधन को जीतकर सरकार बनाते हुए भी नहीं दिखा रही थीं. यहां तक कि इन 17 एजेंसियों में से किसी ने महागठबंधन को उसकी पिछली सीटें यानी 110 भी आते नहीं बता रही थीं, महागठबंधन की सीटों

का अधिकतम अनुमान 108 था. लेकिन ज्यादातर एजेंसियां एनडीए को भी उतनी सीटें आती नहीं बता रही थीं, जितनी 14 नवंबर को 5 बजकर 7 मिनट तक बढ़त के रूप में एनडीए के खाते में थीं. एनडीए को ज्यादातर एग्जिट पोल 135 से 150 के बीच सीटें लाती बता रही थी. हालांकि सबके नंबर अलग अलग थे, सिर्फ पोल डायरी और प्रज्ञा पोल एनालिटिक दो एजेंसियां ऐसी थीं, जिनके मुताबिक एनडीए को 184 से 209 के बीच सीटें मिल रही थीं.

महिलाओं का भारी समर्थन मिला: सवाल है आखिर बिहार में विधानसभा चुनाव नतीजों का अनुमान लगाने में एग्जिट पोल या प्री–पोल इस तरह गलत क्यों साबित होते हैं और 20 वर्षों से लगातार सत्ता में रहने के बावजूद नीतीश कुमार को किसी तरह की एंटी इंकम्बेंसी का सामना क्यों नहीं करना पड़ा? ऐन चुनाव के पहले जिस तरह नीतीश कुमार ने महिलाओं के खाते में 10–10 हजार रुपये डाले और वायदा किया कि चुनाव जीतने पर वे उनकी उद्यमिता को लगातार आगे ले जाएंगे, उससे 20 साल से उनके साथ बनी रहने वाली महिला मतदाता न सिर्फ बनी रहीं बल्कि इस बार 1952 के बाद से सबसे ज्यादा मतदान हुआ.

✍ लोकमित्र गौतम

विंध्य की डायरी

बिहार चुनाव के बाद गुजरात बनने की चर्चा के बीच जोड़तोड़

डॉ. रवि तिवारी

प्रदेश संगठन में बड़े पैमाने पर भारतीय जनता पार्टी में फेरबदल के बाद अब गुजरात पैटर्न में सत्ता के परिवर्तन के मिल रहे संकेतों से विन्ध्य के सम्भावित प्रमुख दावेदारों के बीच इन दिनों हलचलें तेज हो गई हैं. कोई संघ के प्रति अपने अनुराग और सहयोग की चर्चा कर रहा है, तो कोई मुख्यमंत्री से अपनी नजदीकियों को आए दिन सार्वजनिक करता दिखाई देता है. हालांकि अब तक भाजपा में सत्ता में हिस्सेदारी के लिए तय मापदंडों का कोई सुनियोजित खाका प्रकाश में कभी नहीं आया पर हमेशा जातीय संतुलन के साथ क्षेत्रीय परिस्थितियों का आकलन कर नेताओ को अवसर मिलता रहा है. पिछले दो विधानसभा चुनावों से विन्ध्य में जिस प्रकार से दल को सफलता मिलती आ रही है, नेताओं की लगातार जीत उनके अंदर सत्ता के प्रति महत्वकांक्षा का भाव पैदा कर रही है. कुछ दिनों से नेताओं में विद्रोही तेवर भी नजर आने लगे हैं. हालत यह है कि विन्ध्य में कई बार निर्वाचित प्रतिनिधियों ने ही अपने बर्ताव से सरकार को कठघरे में खड़ा कर दिया है. अब देखना यह है कि अगर परिवर्तन होता है तो किस नए चेहरे को सत्ता की सीढ़ी चढने् का मौका मिलता है.

बसपा, सपा और आप की खामोशी

विंध्य क्षेत्र में अब दो ही दल कांग्रेस और भाजपा आमने–सामने दिखाई दे रहे है. बसपा, सपा और आप पूरी तरह से खामोश है. संगठनात्मक गतिविधियां भी उस तरह से नही है जैसी होनी चाहिये. कभी बसपा विंध्य में अपने पैर जमा ली थी और यहा से सांसद–विधायक बसपा के चुने गए. लेकिन कुछ वर्षो में बसपा की स्थित बेहद कमजोर हो गई और जनहित के मुद्दो को लेकर बसपा मुखर होकर विरोध भी नही कर रही. सपा की स्थित पहले भी ज्यादा बेहतर नही थी और अभी भी नही है. लेकिन चुनाव के दौरान बसपा तीसरे विकल्प के रूप में अपनी ताकत का अहसास कराती रही है. टिकट कटने से नाराज अन्य दलों के नेता बगावत कर बसपा का दामन थाम कर मैदान में तो उतरते है लेकिन परिणाम आने के बाद गायब भी हो जाते है. जबकि पार्टी संगठन को मजबूत बनाने प्रयास करना चाहिये. आप पार्टी से उम्मीद थी कि तीसरा विकल्प बनकर उभरेगी लेकिन आप पार्टी भी मजबूत संगठन विंध्य में नही खड़ा कर पाई.

विंध्य में खुशी की लहर

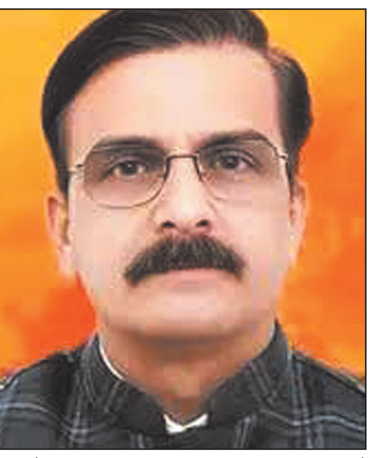

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के नए अध्यक्ष रीवा के डा. रघुराज किशोर तिवारी नियुक्त किये गये है. राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाम की घोषणा होते ही विंध्य क्षेत्र में खुशी की लहर दौड़ गई है. जिसके पीछे का बड़ा कारण यह भी है कि मध्य प्रदेश में पहली बार किसी शख्स को राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया है. डा. तिवारी रीवा कृषि महाविद्यालय में प्रोफेसर के पद पर पदस्थ है और छात्र जीवन से ही विद्यार्थी परिषद से जुड़े हुए है. जबकि इस दौरान उन्होने कई बड़े पदो पर भी कम किया. निश्चित तौर पर विंध्य के लिये यह बड़ी उपलब्धि का पल है. जल्द ही अध्यक्ष का कार्यभार सम्भालेगें. घोषणा के बाद लगातार बधाई का दौर जारी है. डा0 तिवारी कहते है कि हर विचारधारा का सम्मान करते है लेकिन राष्ट्रविरोधी प्रयास बर्दास्त नही. राष्ट्रीय अध्यक्ष का पद मिलना निश्चित रूप से समूचे विंध्य के लिये हर्ष का विषय है.

निठारी कांड : निर्णय हुआ, न्याय नहीं मिला

ऐसी दोषपूर्ण व्यवस्था निंदनीय है जिसमें एक नहीं, इतने सारे बच्चों के कंकाल, अंग–प्रत्यंग नाले में पाए जाते हैं और तथाकथित हत्यारे सबूत के अभाव में छोड़ दिए जाते हैं. फैसला तो हो गया लेकिन क्या उन बच्चों के माता–पिता को न्याय मिल पाया ?

अदालतें ठोस सबूत के आधार पर फैसला देती हैं. यदि अभियोजन ढंग से पुख्ता सबूत और अकाट्य तर्क पेश न कर पाए तो बड़े से बड़ा अभियुक्त भी बेदाग बरी कर दिया जाता है. फिर मुद्दा उठता है कि अपराधी कौन? इसका कोई जवाब नहीं मिलता. न्याय किसी अंधेरे कोने में सिसकता रह जाता है. 2006 में नोएडा के निठारी गांव में 16 बच्चे गायब हो गए थे व्यवसायी मोहिंदर सिंह पंढेर के घर के पीछे नाले में 8 बच्चों के कंकाल पाए गए. पंढेर के नौकर सुरेंद्र कोली पर बच्चों से दुष्कर्म करने के बाद उनकी हत्या करने, यहां तक कि नरभक्षी होने का आरोप था. पुलिस ने पंढेर और कोली को मुख्य आरोपी बनाया. इस सनसनीखेज और दुर्लभ से भी दुर्लभ मामले में नरपिशाच मानकर दोनों अभियुक्तों को ट्रायल कोर्ट ने मौत की सजा सुनाई. बाद में अलाहाबाद हाईकोर्ट ने साक्ष्य के अभाव में पंढेर को रिहा कर दिया. 19 वर्ष जेल में रहने के बाद कोली को सुप्रीम कोर्ट ने सबूत के अभाव में रिहा किया. अभियोजन निसंदिग्ध रूप से कोली को अपराधी नहीं सिद्ध कर पाया. जनाक्रोश के बावजूद पुख्ता जांच करने, सबूत जुटाने और फारेंसिक साक्ष्य पेश कर पाने में पुलिस विफल रही. जब बच्चे गायब हो रहे थे तब पुलिस ने पालकों की शिकायतों पर ध्यान नहीं दिया था ज्यादातर बच्चे गरीब परिवारों के थे. उन्हें खोजने की फरियाद बहरे कानों से टकराकर गुम हो गई. यदि पंढेर और कोली ने बच्चों की हत्या नहीं की तो हत्यारा कौन था? ऐसे ही 2008 में आरुषि तलवार और हेमराज की हत्या के मामले में हुआ. पुलिस अनुमान के आधार पर अदालत में जाए तो मामला टिक नहीं पाता. अदालत को प्रमाण चाहिए, ढीले तरीके से की गई जांच, बेतरतीब रिकवरी रिकार्ड होने तथा फारेंसिक सबूत न जुटाने की वजह से अपराधी छूट जाते हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

अफसर–ठेकेदार हो गए मदमस्त सड़क के गड्ढे नहीं होंगे दुरुस्त

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हमें बताइए कि खराब सड़कों का क्या इलाज है? गड्ढों के बीच सड़क खोजनी पड़ती है. इसके अलावा जहां देखो वहां खुदा, इधर खुदा, उधर खुदा.'

हमने कहा, 'सड़क पर चलते समय खुद सावधानी बरतिए. भगवान ने आंख किसलिए दी है? गड्ढे से बचकर चलिए. फिर भी गिर गए तो संभलकर उठ जाइए. एक शेर है–गिरते हैं शहसवार ही मैदाने जंग में.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हम मैदान की नहीं, उबड़–खाबड़ सड़क के गहरे गड्ढों की बात कर रहे हैं. ठेकेदार और अफसरों की मिलीभगत से निकृष्ट सड़कें बनती हैं. ऊपर की पतली परत निकलते ही महीने भर में गड्ढे चंद्रमा के धरातल के समान अपना मुंह खोल देते हैं. इन गड्ढों की वजह से एक्सीडेंट होते है और डाक्टरों को कमाई का जरिया मिल जाता है. असली बात यह है कि प्रशासन के विभागों में आपसी समन्वय बिल्कुल भी नहीं है. एक विभाग सड़क बनाता है फिर केबल डालनेवाले उसे खोद कर मिट्टी–पत्थर, मलबा भरकर चल देते हैं. इसके बाद जलवाहिनी और सीवेजवाले अपनी सुविधा और फुरसत से सड़क की खुदाई करते हैं. एक साथ तालमेल से काम किया जाए तो बार–बार सड़क खोदने की जरूरत नहीं पड़ेगी.

हमने कहा, 'फिर ठेकेदारों को काम कैसे मिलेगा? रिपेयरिंग, मरम्मत, रिकारपेंटिंग के बिल कैसे तैयार होंगे? सड़क ही नहीं, अंडरब्रिज में भी गंदा पानी बहता है, कीचड़ फैलता है और अंधेरा रहता है. लोग जान हथेली पर लेकर सफर करते हैं. अफसरों को ऐसी खटारा सड़कों का मुआयना करने भेजना चाहिए जब उनकी गाड़ी पलटेगी तो अक्ल आएगी और वह सड़क को मजबूत बनाने पर ध्यान देंगे.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, राजनीति की गाड़ी हिचकोले खा सकती है लेकिन अफसर की गाड़ी कभी पंक्चर नहीं होगी. आपको मालूम होना चाहिए कि कितनी ही मोटी तनख्वाह दो, अफसर भ्रष्टाचार करना नहीं छोड़ता. सिस्टम ऐसे ही चलता है. ऐसी अव्यवस्था देखकर कहा जा सकता है- अफसर करे ना चाकरी, मंत्री करे ना काम, दास मलूका कह गए सबके दाता राम !'

शब्द–सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12082
- डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3		■	4	
5		■		■	6		■
7		8	■	9			10
■	11		■	12		■	
13	■	14				15	
16			■	■	17		
	■	■	18	19		■	
20					■	■	■

बाएं से दाएं
1. वह जाति जो किसी देश में सबसे पहले रहती आई हो (प्रिमिटिव रेस) 4. पाया हुआ, मिला 5. वर्ष, बरस 6. शब्द का अभिप्राय, मतलब, धन–संपत्ति 7. नाव 9. अज्ञात, अप्रसिद्ध (उर्दू) 11. प्रतियोगिता आदि में होड़ 12. गिरने की ध्वनि के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द 14. औटाकर गाढ़ा और लच्छेदार किया हुआ दूध जिसमें चीनी मिली होती है 15. चाचा 16. व्याख्यान, वक्तृता 17. थकावट मिटाना, सुख 18. नष्ट, बर्बाद (उर्दू) 20. नाम रखने का काम या संस्कार

ऊपर से नीचे
1. सरल, सहज (उर्दू) 2. मनोरंजक (उर्दू) 3. जंतर–मंतर, टोना, इंद्रजाल, नजरबंदी (उर्दू) 4. विनय, निवेदन, किसी से कुछ मांगना या चाहना 6. शांति (उर्दू) 8. ठहराना या निश्चित करना (सं.) 9. फटे–पुराने वख का बना बिछौना या ओढ़ना 10. इच्छा, अभिलाषा 13. हो सकना, अनुमान 15. कैद, कारागार, काला 17. कष्टसूचक श्वास, उसांस, कष्ट और ग्लानीसूचक शब्द 18. गीला 19. तीर

Solution 12081

आ	बा	द	■	पा	क	■	चे
सं	द	ल	■	व	ला	य	त
दी	■	दा	ला	न	■	शो	क
■	च	र	स	■	■	ध	■
का	म	■	■	ध	न	रा	ज
ना	गा	श	न	■	फ	■	ब
■	द	र		ता	र	घ	र
ज	ड़		स	त	त	■	न

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा प्रतियोगिता मेंसफ्लता मिलेगी, आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, वर्ष के मध्य में शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा, अधिकारियों का कानूनी मामलों में मेलजोल बढ़ेगा, वर्ष के अन्त में यात्रा कष्टदायक हो सकती है, दाम्पत्य जीवन का निर्वहन होगा, व्यस्तता रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शासन सत्ता का सुख मिलेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों की शिक्षा में सफ्लता मिलेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को कानूनी मामलों में व्यस्तता रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को यात्रा में कष्ट हो सकता है, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को अधिकारियों से मेलजोल बढ़ेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों कोउतावलेपन में हानि हो सकती है, सावधानी रखकर कार्य करना हितकर रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, सुन्दर, हष्टपुष्ट, मधुरभाषी, परिश्रमी, चतुर होगा, अन्याय को कभी सहन नहीं करेगा, विद्या के क्षेत्र में विलंब होगा, उन्नति करेगा, खेलकूद के प्रति लगन रहेगी, माता पिता का आदर करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

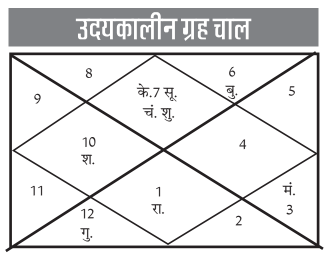

पंचांग

रा.मि. 26 संवत् 2082 मार्गशीर्ष कृष्ण त्रयोदशी चन्द्रवासरे दिन–रात, चित्रा नक्षत्रे रातअंत 5/50, प्रीति योगे दिन 9/32, गर करणे सू.उ. 6/37, सू.अ. 5/23, चन्द्रचार कन्या शाम 4/49 से तुला, पर्व– सोम प्रदोष व्रत, शु.रा. 6,8,9,12,1,4 अ.रा. 7,10,11,2,3,5 शुभांक– 8,0,5.

व्यापार भविष्य

मार्गशीर्ष कृष्ण त्रयोदशी को चित्रा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड़, के भाव में गिरावट आयेगी, गेहूँ, चांवल में तेजी होगी, चांदी के भाव में मंदी का योग है, आज हाजिर मार्केट में बने नीचे के भाव अधिक रहेंगे. भाग्यांक 6139 है.

मेष– निर्माण कार्य में प्रगति होगी, प्रियजनों का मेलजोल बढ़ेगा, क्रोध, आवेश में आकर कोई ऐसा कार्य न करें, जिससे पछताना पड़े, सहयोग की भावना रहेगी.

वृषभ– धार्मिक आयोजन पर विचार होगा, पुराना पैसा मिलने का योग है, अनावश्यक कार्यो को टालना हितकर रहेगा, व्यवसाय के क्षेत्र में प्रगति होगी.

मिथुन– कार्यक्षेत्र में विलंब से नुकसान हो सकता है, वाणी पर संयम रखें, व्यवहारिक संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी, व्यापारिक कार्यो की समस्या हल होगी.

कर्क– सुख सहयोग, मान सम्मान में वृद्धि होगी, संतान के संबंध में चिन्ता रहेगी, शिक्षा प्रतियोगिता के विषय में चल रहा प्रयास सार्थक होगा.

सिंह– पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी, निजी मामलों में किसी बुजुर्ग व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी, मनोरंजन के कार्य सफ्ल होंगे.

कन्या– स्वास्थ्य में गिरावट रह सकती है, समय देखकर कार्य करें, रचनात्मक कार्यो में रूचि रहेगी, नवीन कार्यो में व्यय हो सकता है.

तुला– राजनैतिक लाभ का योग है, शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति होगी, ससुराल पक्ष से लाभ होगा, नवीन योजना बनेगी. समय पर सोचे हुये कार्य बनने का योग है.

वृश्चिक– आय कम, व्यय अधिक होने से मन चिंतित रहेगा, नवीन कार्य की योजना बनेगी, दूर गये मित्र के सबंध में सुखद समाचार मिलेगा, निजी कार्यो की रूपरेखा बनेगी.

धनु– टाल मटोल के चलते कामकाज में परेशानी हो सकती है, शत्रुओं से सावधानी रखें, वृद्ध व्यक्ति के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, मान सम्मान मिलेगा.

मकर– मानसिक प्रसन्नता में वृद्धि होगी, स्त्री सुख सहयोग मिलेगा, संतान के अधिकार में वृद्धि होगी, आत्म विश्वास मनोबल बना रहेगा.

कुम्भ– स्त्री सुख सहयोग मिलेगा, व्यापार में प्रगति होगी, मैत्री संबंध में प्रगाढ़ता आयेगी, वाहन का प्रयोग करते समय सावधानी रखें.

मीन– शत्रुओं की पराजय होगी, धार्मिक कार्यो में रूचि बनी रहेगी, संतान का सहयोग रहेगा, परिवर्तन की दिशा में चल रहा प्रयास सफ्ल होगा.

SUDOKU 7214

		2				1		
				2	5	7	3	
	9	4		6	7			2
	5		4		3			9
	8			9			7	
1			6		8		2	
6			7	4		9	5	
	4	5	8	3				
		8				6		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7213

9	1	6	2	3	7	4	5	8
8	2	3	4	5	9	1	7	6
4	5	7	1	6	8	3	9	2
5	6	8	7	1	2	9	3	4
1	7	4	9	8	3	2	6	5
2	3	9	5	4	6	8	1	7
7	4	1	8	9	5	6	2	3
3	8	5	6	2	1	7	4	9
6	9	2	3	7	4	5	8	1